[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 4994 **H**

Unique Paper Code : 2052202403

Name of the Paper : किसी एक साहित्यकार का अध्ययन (जयशंकर प्रसाद)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – DSC**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी
सपूत मातृभूमि के- रुको न शूर साहसी!
अराति सैन्य सिंधु में, सुवाडवाग्नि से जलो,
प्रवीर हो जयी बनो - बढ़े चलो, बढ़े चलो!

अथवा

जीवन कितना? अति लघु क्षण,
ये शलभ पुंज-से कण-कण,
तृष्णा वह अनलशिखा बन

P.T.O.

दिखलाती रक्तिम यौवन।
जलने की क्यों न उठे उमंग?

(ख) उसका मन सहसा विचलित हो उठा, मधुरता नष्ट हो गई। जितनी सुख-कल्पना थी, वह जैसे अन्धकार में विलीन होने लगी। वह भयभीत थी, पहला भय उसे अरुण के लिए उत्पन्न हुआ, यदि वह सफल न हुआ तो? फिर सहसा सोचने लगी- वह क्यों सफल हो? श्रावस्ती दुर्ग एक विदेशी के अधिकार में क्यों चला जाय? मगध का चिरशत्र! ओह, उसकी विजय! कोशल-नरेश ने क्या कहा था- 'सिंहमित्र की कन्या'। सिंहमित्र, कोशल का रक्षक वीर, उसी की कन्या आज क्या करने जा रही है? नहीं, नहीं, मधूलिका! मधूलिका!! जैसे उसके पिता उस अन्धकार में पुकार रहे थे। वह पगली की तरह चिल्ला उठी। रास्ता भूल गई।

अथवा

ईसा की अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में वही काशी नहीं रह गयी थी, जिसमें उपनिषद् के अजातशत्रु की परिषद् में ब्रह्मविद्या सीखने के लिए विद्वान ब्रह्मचारी आते थे। गौतम बुद्ध और शंकराचार्य के धर्म-दर्शन के वाद-विवाद, कई शताब्दियों से लगातार मंदिरों और मठों के ध्वंस और तपस्वियों के वध के कारण, प्राय: बन्द-से हो गये थे। यहाँ तक कि पवित्रता और छुआछूत में कट्टर वैष्णव-धर्म भी उस विशृंखला में, नवागन्तुक धर्मोन्माद में अपनी असफलता देखकर काशी में अघोर रूप धारण कर रहा था। उसी समय समस्त न्याय और बुद्धिवाद को शस्त्र-बल के सामने झुकते देखकर, काशी के विच्छिन्न और निराश

नागरिक जीवन ने, एक नवीन सम्प्रदाय की सृष्टि की। वीरता जिसका धर्म था। अपनी बात पर मिटना, सिंह-वृत्ति से जीविका ग्रहण करना, प्राण-भिक्षा माँगनेवाले कायरों तथा चोट खाकर गिरे हुए प्रतिद्वन्द्वी पर शस्त्र न उठाना, सताये निर्बलों को सहायता देना और प्रत्येक क्षण प्राणों को हथेली पर लिये घूमना, उसका बाना था। उन्हें लोग काशी में गुंडा कहते थे।

(ग) यह दम्भ तुम्हारा प्राचीन संस्कार है। क्यों राजन् क्या दास-दासी मनुष्य नहीं है? क्या कई पीढ़ी ऊपर तक तुम प्रमाण दे सकते हो कि सभी राजकुमारियों की ही सन्तान इस सिहासन पर बैठी है या प्रतिज्ञा करोगे कि कई पीढ़ी आने वाली तक दासी पुत्र इस पर न बैठने पावेगे? यह छोटे-बड़े का भेद क्या अभी इस संकीर्ण हृदय में इस तरह घुसा है कि निकल नहीं सकता? क्या जीवन की वर्तमान स्थिति देख कर प्राचीन अन्धविश्वासों का, जो न जाने किस कारण होते आए है, तुम बदलने के लिए प्रस्तुत नहीं हो? क्या इस क्षणिक भव में तुम अपनी स्वतन्त्र सत्ता अनन्त काल तक बनाए रखोगे? और भी, क्या उस आर्य पद्धति को तुम भूल गए कि पिता से पुत्र की गणना होती है? राजन, सावधान हो, इस अपनी सुयोग्य शक्ति को स्वयं कुंठित न बनाओ।

अथवा

बाह्य उपाधि से हटकर आन्तरहेतु की ओर कवि-कर्म प्रेरित हुआ। इस नये प्रकार की अभिव्यक्ति के लिए जिन शब्दों की योजना हुई, हिन्दी में पहले वे कम समझे जाते थे; किन्तु शब्दों में भिन्न प्रयोग से एक स्वतन्त्र अर्थ उत्पन्न करने की शक्ति

है। समीप के शब्द भी उस शब्द-विशेष का नवीन अर्थ द्योतन करने में सहायक होते हैं। भाषा के निर्माण में शब्दों के इस व्यवहार का बहुत हाथ होता है। अर्थ-बोध व्यवहार पर निर्भर करता है, शब्द-शास्त्र में पर्यायवाची तथा अनेकार्थवाची शब्द इसके प्रमाण हैं। इसी अर्द्ध-चमत्कार का माहात्म्य है कि कवि की वाणी में अभिधा से विलक्षण अर्थ साहित्य में मान्य हुए।

2. 'हिमाद्रि तुंग शृंग से' कविता में निहित राष्ट्रीय भावना पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'बीती विभावरी जाग री' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

3. 'पुरस्कार' कहानी की कथावस्तु पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'गुंडा' कहानी के नन्हकू सिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए?

4. नाटक के तत्वों के आधार पर 'अजातशत्रु' नाटक की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'अजातशत्रु' नाटक के उद्देश्य पर विचार कीजिए।

5. 'यथार्थवाद और छायावाद' निबंध के आधार पर जयशंकर प्रसाद की भाषा शैली पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'यथार्थवाद और छायावाद' निबंध की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।